[९]

अथ कर्णवेधसंस्कारविधिं वक्ष्यामः

अत्र प्रमाणम्—

कर्णवेधो वर्षे तृतीये पञ्चमे वा ॥

—यह आश्वलायन गृह्यसूत्र का वचन है ॥

बालक के कर्ण वा नासिका के वेध का समय जन्म से तीसरे वा पांचवें वर्ष का उचित है ।

जो दिन कर्ण वा नासिका के वेध का ठहराया हो, उसी दिन बालक को प्रातःकाल शुद्ध जल से स्नान और वस्त्रालङ्कार धारण कराके बालक की माता यज्ञशाला में लावे । पृष्ठ **४-२४ तक लिखा हुआ सब विधि करे** और उस बालक के आगे कुछ खाने का पदार्थ वा खिलौना धरके—

ओं भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

इस मन्त्र को पढ़के चरक सुश्रुत वैद्यक-ग्रन्थों के जाननेवाले सद्वैद्य के हाथ से **कर्ण वा नासिका वेध** करावें कि जो नाड़ी आदि को बचाके वेध कर सके । पूर्वोक्त मन्त्र से दक्षिण कान । और—

ओं वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियꣳ सखायं परिषस्वजाना ।
योषेव शिङ्क्ते विततािध धन्वञ्ज्या इयꣳ समने पारयन्ती ॥

इस मन्त्र को पढ़के दूसरे वाम कर्ण का वेध करे ।

तत्पश्चात् वही वैद्य उन छिद्रों में शलाका रक्खे कि जिस से छिद्र पूर न जावें । और ऐसी ओषधि उस पर लगावे, जिस से कान पकें नहीं और शीघ्र अच्छे हो जावें ॥

॥ इति कर्णवेधसंस्कारविधिः समाप्तः ॥